



ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्म-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)

3049-2327(Print)

IIFS Impact Factor-4.5

Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026

Page No.- 509-514

©2026 Gyanvidha

<https://journal.gyanvidha.com>

Author's :

1. अशोक कुमार

शोधार्थी, वेद विभाग,
गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार.

2. डॉ. दीन दयाल

सह-लेखक/निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर,
वेद विभाग, गुरुकुल काँगड़ी
समविश्वविद्यालय, हरिद्वार.

Corresponding Author :

अशोक कुमार

शोधार्थी, वेद विभाग,
गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार.

निर्विषयता : स्वामी सत्यपति के क्रियात्मक योग का मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक मॉडल

सारांश : प्रस्तुत शोध-पत्र स्वामी सत्यपति परिव्राजक द्वारा प्रतिपादित "निर्विषयता" की अवधारणा का मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक सन्दर्भ में विश्लेषण करता है। स्वामी जी के अनुसार निर्विषयता, क्रियात्मक योग का प्रथम सोपान है, जिसमें अभ्यास काल में मन को किसी भी विषय से रहित रखा जाता है। इस अध्ययन में निर्विषयता के सैद्धान्तिक स्वरूप, आत्मा-मन-इन्द्रिय निर्माण के त्रि-स्तरीय मॉडल, तथा रोज़ के योग शिविरों में प्रयुक्त व्यवहारिक अभ्यास विधि का विवेचन किया गया है। आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में इस मॉडल का मूल्यांकन करने पर ज्ञात होता है कि निर्विषयता का अभ्यास चिन्ता-नियन्त्रण, ध्यान-केन्द्रण, भावनात्मक नियमन और तनाव-प्रबन्धन में सहायक है। आध्यात्मिक दृष्टि से यह आत्म-साक्षात्कार और समाधि की भूमिका तैयार करता है। निष्कर्षतः निर्विषयता केवल एक धार्मिक अवधारणा नहीं, बल्कि 21वीं सदी के मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक साधना पद्धति है।

मुख्य शब्द : निर्विषयता, क्रियात्मक योग, स्वामी सत्यपति परिव्राजक, मनोविज्ञान, ध्यान-केन्द्रण, चिन्ता-नियन्त्रण, आत्म-निर्माण, योग चिकित्सा।

1. प्रस्तावना : आज के आधुनिक युग में मनुष्य का मन लगातार बाहरी विषयों में उलझा रहता है। सूचना, उपभोग और प्रतिस्पर्धा के दबाव के कारण एकाग्रता और आत्म-शांति लगातार कम होती जा रही है¹। ऐसे समय में भारतीय योग परम्परा में बताई गई "मनोनिग्रह" की अवधारणा विशेष महत्व रखती है। पारंपरिक योग साधनाओं में वृत्ति निरोध और वैराग्य पर जोर दिया गया है, परंतु 21वीं सदी में स्वामी सत्यपति परिव्राजक ने इस विषय को एक नए मनोवैज्ञानिक और क्रियात्मक रूप में प्रस्तुत किया है²।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक, दर्शन योग महाविद्यालय, रोज़ के

संस्थापक, ने अपने ग्रन्थ बृहती ब्रह्ममेधा और विभिन्न शिविरों में "निर्विषयता" को क्रियात्मक योग की केन्द्रीय प्रक्रिया बताया है³। उनके अनुसार निर्विषयता का अर्थ केवल विषय-भोग का त्याग नहीं है, बल्कि अभ्यास काल में मन को किसी भी विषय - चाहे वह ईश्वर, आत्मा, प्रकृति या सांसारिक वस्तु हो - से आसक्ति रहित रखना है। यह एक सक्रिय मानसिक अनुशासन है जो आत्मा, मन और इन्द्रिय के त्रि-स्तरीय निर्माण से होकर जाता है⁴।

इस पत्र का उद्देश्य स्वामी सत्यपति द्वारा प्रस्तुत निर्विषयता के सिद्धान्त का विश्लेषण करना है और यह देखना है कि यह आधुनिक मनोविज्ञान के सन्दर्भ में चिन्ता-नियन्त्रण, एकाग्रता और आत्म-विकास का एक व्यावहारिक मॉडल कैसे प्रस्तुत करता है⁵। अध्ययन का आधार मुख्यतः बृहती ब्रह्ममेधा और 2003 से रोज़ में आयोजित योग शिविरों में दिए गए निर्देश हैं।

इस मॉडल की विशेषता यह है कि यह केवल नैतिक उपदेश नहीं है, बल्कि 25 आचार-नियम और दिनचर्या के माध्यम से जीवन में उतरने वाली एक क्रियात्मक पद्धति है⁶।

2. निर्विषयता की अवधारणा : "निर्विषयता" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - 'निः' + 'विषयता'। 'निः' का अर्थ है रहित और 'विषयता' का अर्थ है किसी विषय से जुड़ाव। इस प्रकार निर्विषयता का शाब्दिक अर्थ हुआ "किसी भी विषय से रहित अवस्था"¹।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक के अनुसार निर्विषयता केवल इन्द्रियों को विषयों से दूर रखना नहीं है। यह एक गहरी आंतरिक प्रक्रिया है²। वे कहते हैं कि सामान्यतः मनुष्य का मन तीन स्तर पर विषयों से जुड़ा है - स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल स्तर पर हम वस्तुओं, व्यक्तियों और घटनाओं को विषय बनाते हैं। सूक्ष्म स्तर पर हम विचारों, भावनाओं और स्मृतियों को विषय बनाते हैं। और कारण स्तर पर हम ईश्वर, आत्मा, प्रकृति जैसी अवधारणाओं को भी विषय बना लेते हैं³।

स्वामी जी का मत है कि जब तक अभ्यास काल में मन किसी न किसी को विषय बनाता रहेगा, तब तक सच्ची एकाग्रता संभव नहीं है। इसी कारण उन्होंने क्रियात्मक योग में निर्विषयता को प्रथम और अनिवार्य सोपान माना है⁴। बृहती ब्रह्ममेधा में उन्होंने लिखा है कि "अभ्यास काल में मन को ईश्वर का भी चिन्तन नहीं करना है, आत्मा का भी चिन्तन नहीं करना है, प्रकृति का भी चिन्तन नहीं करना है"⁵।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि निर्विषयता का अर्थ शून्य या जड़ता नहीं है। यह मन को खाली करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि मन को विषय-रहित करके उसे निर्मल बनाने की प्रक्रिया है⁶। जैसे दर्पण पर धूल जम जाने से उसमें प्रतिबिम्ब स्पष्ट नहीं दिखता, वैसे ही मन पर विषयों की परतें जम जाने से आत्मा का स्वरूप स्पष्ट नहीं होता। निर्विषयता उस धूल को हटाने का कार्य करती है।

पारंपरिक योग में "वैराग्य" और "वृत्ति निरोध" की बात आती है। परंतु स्वामी सत्यपति का निर्विषयता का सिद्धान्त उससे एक कदम आगे है। वैराग्य में हम विषयों से द्वेष करते हैं, और वृत्ति निरोध में हम वृत्तियों को बलपूर्वक रोकते हैं। जबकि निर्विषयता में न द्वेष है न दमन। इसमें हम बस अभ्यास के समय मन को किसी भी विषय से न जोड़ने का संकल्प करते हैं। यह एक सकारात्मक और रचनात्मक अनुशासन है⁷।

रोज़ के शिविरों में स्वामी जी ने इसे बहुत व्यावहारिक रूप से समझाया। उन्होंने कहा कि जब हम जप करते हैं, आसन करते हैं या ध्यान करते हैं, उस समय मन में "मैं यह कर रहा हूँ" या "मुझे यह फल मिलेगा" जैसे विचार भी विषय बन जाते हैं। इसलिए अभ्यास के समय कर्ता-भाव और फल-भाव दोनों का त्याग आवश्यक है⁸।

इस प्रकार निर्विषयता, क्रियात्मक योग की नींव है। इसी नींव पर आगे चलकर आत्म-मन-इन्द्रिय का निर्माण होता है।

3. आत्मा-मन-इन्द्रिय निर्माण मॉडल : स्वामी सत्यपति परिव्राजक का सबसे मौलिक योगदान उनका "त्रि-स्तरीय

निर्माण मॉडल" है। उनके अनुसार मानव व्यक्तित्व तीन स्तरों से मिलकर बना है - आत्मा, मन और इन्द्रियाँ। निर्विषयता का अभ्यास इन्हीं तीनों स्तरों को शुद्ध और सशक्त करने की प्रक्रिया है¹।

क. इन्द्रिय निर्माण : पहला स्तर है इन्द्रियों का अनुशासन। स्वामी जी ने शिविर के 25 नियमों में इन्द्रिय संयम पर सबसे ज्यादा जोर दिया है। आहार, विहार, निद्रा और व्यवहार के नियम इसी उद्देश्य से बनाए गए हैं²।

उनका कहना है कि जब तक इन्द्रियाँ बाहर विषयों की ओर भागती रहेंगी, तब तक मन स्थिर नहीं हो सकता। इसलिए शिविर में मौन, ब्रह्मचर्य, सात्विक भोजन और समय की पाबंदी रखी जाती है। यह इन्द्रियों को बाहर से समेटकर अंदर की ओर मोड़ने का पहला कदम है।

ख. मन निर्माण : दूसरा स्तर है मन का निर्माण। इन्द्रियाँ शांत होने के बाद मन में उठने वाली वृत्तियों को देखना और उन्हें विषय न देना ही मन-निर्माण है³।

स्वामी जी कहते हैं कि मन स्वभाव से चंचल है। वह हर पल कोई न कोई विषय पकड़ लेता है। निर्विषयता का अभ्यास यही है कि मन में जो भी विचार आए, उसे "विषय" न बनाया जाए। न उसका विरोध करो, न उसका समर्थन। बस उसे आने दो और जाने दो। इस अभ्यास से मन की शक्ति बढ़ती है और वह एकाग्र होने लगता है।

ग. आत्म निर्माण : तीसरा और अंतिम स्तर है आत्म-निर्माण। जब इन्द्रियाँ और मन दोनों शुद्ध हो जाते हैं, तब आत्मा का स्वरूप स्वयं प्रकाशित होने लगता है⁴।

स्वामी जी के अनुसार आत्मा पहले से ही शुद्ध है। उसे बनाना नहीं है, बस उस पर जमी विषयों की धूल हटानी है। निर्विषयता की निरंतर साधना से अभ्यासी को अपने वास्तविक स्वरूप का अनुभव होता है। यही अवस्था समाधि के निकट ले जाती है।

तीनों का संबंध : ये तीनों स्तर एक दूसरे से जुड़े हैं। इन्द्रिय निर्माण के बिना मन निर्माण संभव नहीं, और मन निर्माण के बिना आत्म निर्माण संभव नहीं⁵। इसलिए स्वामी जी ने शिविर में दिनचर्या को बहुत कठोर रखा है। सुबह 4 बजे उठना, सामूहिक योग, मौन, निश्चित समय पर भोजन - ये सब इसी त्रि-स्तरीय मॉडल को जमीन पर उतारने के लिए हैं।

इस प्रकार निर्विषयता केवल एक दार्शनिक विचार नहीं है। यह एक पूरा मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक मॉडल है जो व्यक्ति को बाहर से भीतर की ओर ले जाता है।

4. क्रियात्मक योग में अभ्यास विधि : स्वामी सत्यपति परिव्राजक ने निर्विषयता को केवल सैद्धान्तिक स्तर पर नहीं छोड़ा। उन्होंने इसे एक व्यावहारिक "क्रियात्मक योग" के रूप में विकसित किया। इसका मूल उद्देश्य अभ्यास काल में मन को पूरी तरह विषय-रहित रखना है¹।

क. अभ्यास काल की परिभाषा : स्वामी जी के अनुसार "अभ्यास काल" वह समय है जब साधक जानबूझकर योग, जप, ध्यान या कोई अनुष्ठान करता है। इस पूरे समय में मन को किसी भी विषय से नहीं जोड़ना है। न ईश्वर को विषय बनाना है, न आत्मा को, न गुरु को, न फल को²।

वे कहते हैं - "करते समय कर्ता मत बनो, पाते समय भोक्ता मत बनो। बस क्रिया करो"। यही निर्विषय अभ्यास है।

ख. शिविर की 25 आचार-नियम और दिनचर्या : रोज़ में 2003 से चल रहे योग शिविरों में इस अभ्यास विधि को 25 नियमों और कठोर दिनचर्या के माध्यम से सिखाया जाता है³।

मुख्य नियम :

1. मौन: शिविर अवधि में अनावश्यक वार्तालाप वर्जित। इससे वाणी और मन दोनों का संयम होता है।
2. समय की पाबंदी: सुबह 4 बजे उठना, निश्चित समय पर योग, भोजन, विश्राम। इससे इन्द्रियाँ अनुशासित होती हैं।
3. आहार नियम: सात्विक, बिना लहसुन-प्याज का भोजन। उपवास और अल्पाहार पर बल।
4. ब्रह्मचर्य और सरल जीवन: व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं का त्याग। इससे मन बाहरी विषयों से हटता है।

5. सामूहिक अभ्यास: सभी साधक एक साथ योग और ध्यान करते हैं। सामूहिक ऊर्जा से एकाग्रता बढ़ती है⁴।

दिनचर्या का ढांचा इस प्रकार है - प्रातः योगाभ्यास, फिर स्वाध्याय, दोपहर में सेवा, सायं सत्संग और रात्रि में मौन ध्यान। इस पूरी दिनचर्या का एक ही लक्ष्य है - 24 घंटे मन को विषय-रहित रखना।

ग. अभ्यास की तीन अवस्थाएँ : स्वामी जी ने अभ्यास की तीन अवस्थाएँ बताई हैं⁵:

1. स्थूल अवस्था: शुरुआत में साधक को बाहर के विषय छोड़ने में कठिनाई होती है। इसलिए नियमों का सख्ती से पालन कराया जाता है।

2. सूक्ष्म अवस्था: जब बाहरी विषय छूट जाते हैं, तब मन में विचार और कल्पनाएँ विषय बनती हैं। इन्हें साक्षी भाव से देखना होता है।

3. कारण अवस्था: अंतिम अवस्था में "मैं साधक हूँ" "मुझे समाधि चाहिए" जैसे सूक्ष्म अहंकार भी विषय बन जाते हैं। इन्हें भी छोड़ना होता है।

घ. सावधानियाँ : स्वामी जी चेतावनी देते हैं कि निर्विषयता का अर्थ जड़ता या सुस्ती नहीं है। अभ्यास के समय आलस्य आए तो उसे भी विषय मत बनाओ। बस उठकर क्रिया में लग जाओ। और अभ्यास के बाद सामान्य जीवन में विषयों का सम्यक उपयोग करना है, द्वेष नहीं करना है⁶।

इस प्रकार क्रियात्मक योग की अभ्यास विधि, निर्विषयता को जीवन का हिस्सा बना देती है।

5. मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक उपादेयता : स्वामी सत्यपति की निर्विषयता की अवधारणा केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है। इसका गहरा मनोवैज्ञानिक महत्व भी है। आज के समय में जहाँ चिन्ता, अवसाद और ध्यान-भंग आम समस्या है, वहाँ यह मॉडल एक व्यावहारिक समाधान देता है¹।

क. मनोवैज्ञानिक उपादेयता :

1. चिन्ता और तनाव में कमी: जब मन किसी विषय से नहीं जुड़ता तो "भविष्य की चिन्ता" और "भूत की स्मृति" दोनों कम हो जाती हैं। अभ्यास काल में मन वर्तमान में रहता है। इससे तनाव हार्मोन कोर्टिसोल का स्तर घटता है²।

2. एकाग्रता में वृद्धि: बार-बार मन को विषय-रहित करने के अभ्यास से मन की भटकन कम होती है। यह एक तरह का "अटेंशन ट्रेनिंग" है। शिविर में 2-3 घंटे तक एक आसन में बैठना इसी का परिणाम है³।

3. भावनात्मक संतुलन: जब हम किसी विचार या भावना को विषय नहीं बनाते, तो उससे राग-द्वेष नहीं बनता। इससे क्रोध, ईर्ष्या और कुंठा अपने आप शांत हो जाते हैं⁴।

ख. आध्यात्मिक उपादेयता :

1. आत्म-साक्षात्कार का मार्ग: स्वामी जी का मानना है कि आत्मा पर विषयों की परतें जमी हैं। निर्विषयता उन परतों को हटाती है। जब मन निर्विषय होता है, तब आत्मा का प्रकाश स्वयं प्रकट होता है⁵।

2. समाधि की भूमिका: पातंजलि योग में "निर्वितर्क समाधि" की बात आती है। स्वामी जी की निर्विषयता उसी की तैयारी है। अभ्यास काल में विषयों का त्याग ही साधक को गहरे ध्यान में ले जाता है⁶।

3. निष्काम कर्म का आधार: जब कर्ता-भाव और फल-भाव नहीं रहते, तो कर्म बंधन नहीं बनाते। यही गीता का निष्काम कर्म है। इस प्रकार निर्विषयता, कर्म योग को भी संभव बनाती है⁷।

ग. सामाजिक उपादेयता : शिविर के 25 नियम व्यक्ति को स्वार्थ से हटाकर सेवा की ओर ले जाते हैं। मौन, सादगी और अनुशासन से सामाजिक व्यवहार में शांति आती है। इस प्रकार एक निर्विषय व्यक्ति समाज के लिए भी बोझ नहीं, बल्कि सहारा बनता है⁸।

संक्षेप में, निर्विषयता व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा तीनों स्तरों पर स्वास्थ्य और शांति लाती है।

6. निष्कर्ष : प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट है कि स्वामी सत्यपति परिव्राजक द्वारा प्रतिपादित "निर्विषयता" क्रियात्मक

योग का केंद्रीय सिद्धान्त है¹। यह केवल विषय-भोग का त्याग नहीं, बल्कि अभ्यास काल में मन को किसी भी प्रकार के आलंबन से रहित रखने की एक सक्रिय प्रक्रिया है।

स्वामी जी ने आत्मा-मन-इन्द्रिय के त्रि-स्तरीय मॉडल के माध्यम से दिखाया कि कैसे क्रमबद्ध अनुशासन से व्यक्ति निर्विषयता को प्राप्त कर सकता है²। शिविर के 25 नियम और कठोर दिनचर्या इस सिद्धान्त को जमीन पर उतारने का व्यावहारिक साधन हैं।

आधुनिक मनोविज्ञान के संदर्भ में देखें तो यह मॉडल चिन्ता-नियन्त्रण, एकाग्रता और भावनात्मक संतुलन के लिए अत्यंत उपयोगी है³। आध्यात्मिक दृष्टि से यह समाधि और आत्म-साक्षात्कार की भूमिका तैयार करता है।

अतः कहा जा सकता है कि निर्विषयता, 21वीं सदी के मानव के लिए योग का एक प्रासंगिक और वैज्ञानिक रूप है। आगे इस विषय पर प्रयोगात्मक शोध की आवश्यकता है ताकि इसके मनोवैज्ञानिक प्रभावों को और अधिक प्रमाणिक रूप से स्थापित किया जा सके⁴।

संदर्भ सूची:

खंड 1: प्रस्तावना - सन्दर्भ सूची

1. विश्व स्वास्थ्य संगठन। मानसिक स्वास्थ्य रिपोर्ट। 2021।
2. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, पृ. 10-12।
3. सत्यपति परिव्राजक। क्रियात्मक योग शिविर के निर्देश। व्याख्यान संग्रह, 2003 से।
4. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। अध्याय: त्रिगुणात्मक विकास, पृ. 45-48।
5. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर प्रतिभागियों का अनुभव सर्वेक्षण। 2015-2023।
6. दर्शन योग महाविद्यालय। योग शिविर के 25 नियम। रोजड़, संस्करण 2022।

खंड 2: निर्विषयता की अवधारणा - सन्दर्भ सूची

1. संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश। वाचस्पत्यम्, खंड 4।
2. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, पृ. 55।
3. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। पृ. 56-58।
4. सत्यपति परिव्राजक। क्रियात्मक योग शिविर के निर्देश। व्याख्यान, 2018।
5. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। पृ. 60।
6. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। पृ. 62।
7. पतंजलि। योगसूत्र। साधनपाद, सूत्र 1। तुलनात्मक अध्ययन हेतु।
8. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर व्याख्यान टिप्पणी। रोजड़, 2020।

खंड 3: आत्मा-मन-इन्द्रिय निर्माण मॉडल - सन्दर्भ सूची

1. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, पृ. 45-48।
2. दर्शन योग महाविद्यालय। योग शिविर के 25 नियम। रोजड़, 2003 से वर्तमान।
3. सत्यपति परिव्राजक। क्रियात्मक योग शिविर के निर्देश। व्याख्यान संग्रह, सत्र 2019।
4. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। अध्याय: त्रिगुणात्मक विकास, पृ. 112।
5. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर दिनचर्या पत्रक। रोजड़।

खंड 4: क्रियात्मक योग में अभ्यास विधि - सन्दर्भ सूची

1. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, पृ. 78-80।
2. सत्यपति परिव्राजक। क्रियात्मक योग शिविर के निर्देश। व्याख्यान, 15 जुलाई 2018।

3. दर्शन योग महाविद्यालय। योग शिविर के 25 नियम। रोजड़, संस्करण 2022।
4. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर दिनचर्या पत्रक। रोजड़।
5. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। अध्याय: अभ्यास की अवस्थाएँ, पृ. 95-97।
6. सत्यपति परिव्राजक। प्रवचन संग्रह। खंड 3, पृ. 22।

खंड 5: मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक उपादेयता - सन्दर्भ सूची

1. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, पृ. 130-132।
2. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर प्रतिभागियों का अनुभव सर्वेक्षण। 2015-2023।
3. सत्यपति परिव्राजक। क्रियात्मक योग शिविर के निर्देश। व्याख्यान, 2019।
4. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। अध्याय: भाव शुद्धि, पृ. 88।
5. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। पृ. 115।
6. पतंजलि। योगसूत्र। समाधिपाद, सूत्र 43। तुलनात्मक अध्ययन हेतु।
7. श्रीमद्भगवद्गीता। अध्याय 2, श्लोक 47। तुलनात्मक अध्ययन हेतु।
8. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर के सामाजिक प्रभाव पर रिपोर्ट। रोजड़।

खंड 6: निष्कर्ष - सन्दर्भ सूची

1. सत्यपति परिव्राजक। बृहती ब्रह्ममेधा। दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़।
2. दर्शन योग महाविद्यालय। योग शिविर के 25 नियम। रोजड़।
3. दर्शन योग महाविद्यालय। शिविर प्रतिभागियों का अनुभव सर्वेक्षण। 2015-2023।
4. लेखक का सुझाव।

•